हम यहाँ क्यों है ?

एन.ए. संगठन में आने से पहले हम अपनी जिंदगी व्यवस्थित नहीं रख सके। हम सामान्य व्यक्तियों की तरह न तो जी सके, ना ही जीवन का आनंद उठा सके। हमें कुछ तो अलग चाहिये ही था और हमें लगा कि हमने उसे नशीले पदार्थों में पा लिया था। हमने इनका इस्तेमाल अपने परिवार, पति, पत्नी और बच्चों के कल्याण से भी ज्यादा जरूरी समझा। हमें किसी भी कीमत पर नशा चाहिये ही था। हमने कई लोगों को अति हानि पहुँचायी, लेकिन सबसे ज्यादा हानि पहुँचायी, अपने आप को। अपनी व्यक्तिगत जिम्मेदारियों को स्वीकारने की असमर्थता के कारण हम असलियत में अपनी ही समस्याएँ पैदा कर रहे थे। ऐसा लगता था कि हम जिंदगी की शर्तों पर जिंदगी का सामना करने में असमर्थ थे।

हममें से अधिकतर लोगों को एहसास हुआ कि अपने ऐडिक्शन में हम धीर-धीर आत्महत्या कर रहे थे, लेकिन ऐडिक्शन जीवन का इतना चालाक शत्रु है कि हम इसके बारे में कुछ भी करने की शक्ति गवां बैठे थे। हममें से कई कैदखाने पहुँचे या हमने दवा, धर्म और मनो-चिकित्सा के द्वारा मद्द खोजी। हमारे लिये इनमें से कोई भी तरीका पर्याप्त नहीं था। हमारी बीमारी हर बार फिर उभर आई या बढ़ती रही, जब-तक हताश होकर हमने नारकॉटिक्स एनॉनिम्स में एक दूसरे से मद्द नही ली।

एन.ए. मे आने के बाद हमें एहसास हुआ कि हम बीमार लोग थे। हम ऐसी बीमारी से पीड़ित थे जिसका कोई जाना हुआ ईलाज नहीं है। परंतु इसे किसी मुकाम पर रोका जा सकता है और तब सुधार संभव है।